ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

AJANTA

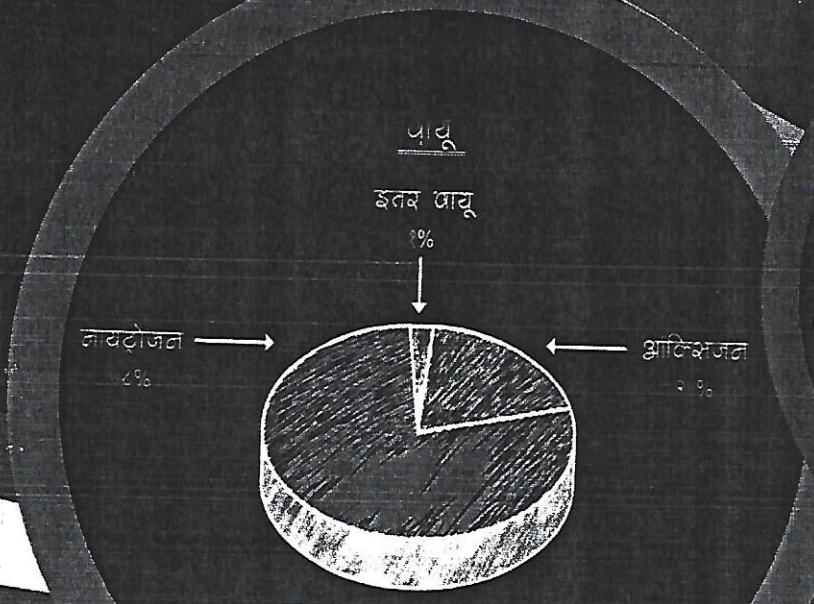

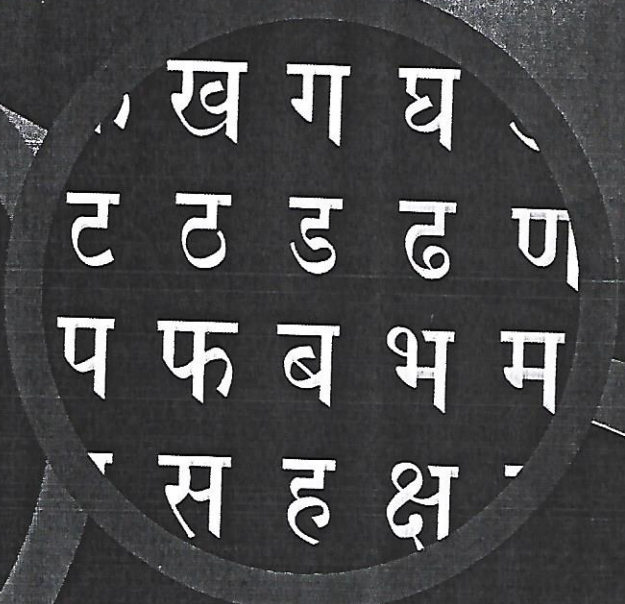

Volume-VIII, Issue-I
January - March - 2019
Pali / Sanskrit / Music

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 : 5.5
www.sjifactor.com
Principal
Arts, Science & Commerce
Tal. Tuljapur

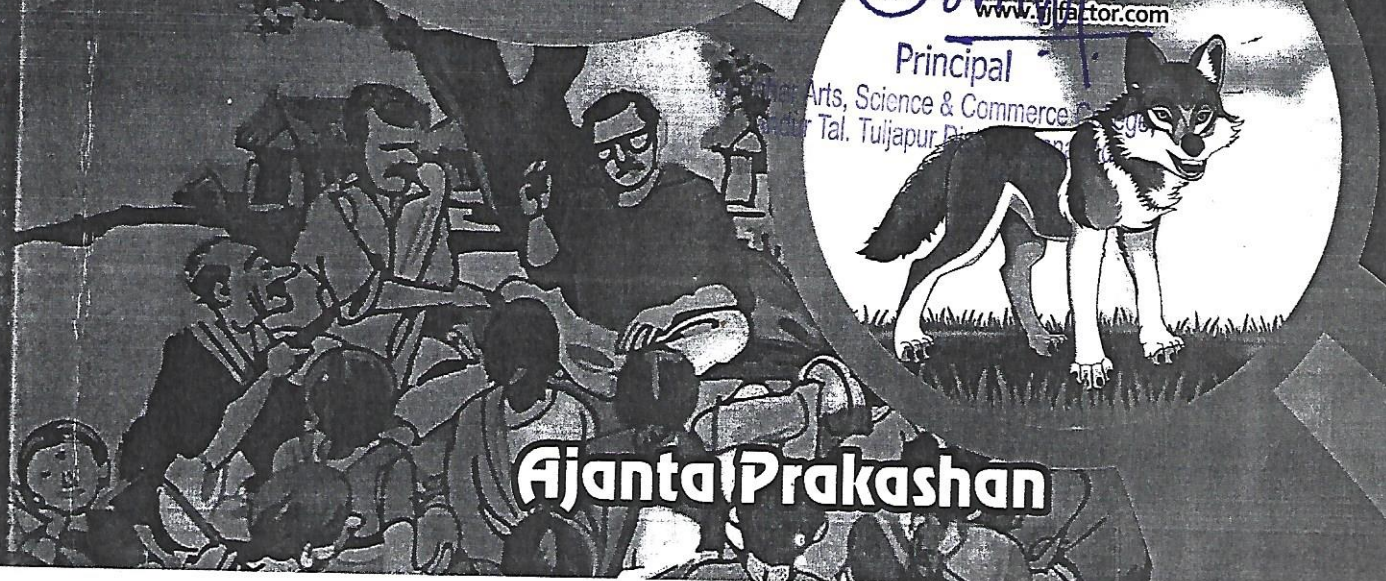

Ajanta Prakashan

CONTENTS OF SANSKRIT

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	देवदेवेश्वरमहाकाव्ये उपमा सौंदर्यम् **सौ. अबोली व्यास (सावदेकर)**	१-५
२	सामगानातील स्वरांकन पध्दती **प्रा. दिपाली पांडे**	६-८
३	धर्मशास्त्रातील व्यवहारान्तर्गत साक्षिदाराचे स्वरुप **प्रा. डॉ. गणंजय यज्ञेश्वरराव कहाळेकर**	९-१२
४	श्रीगुलाबराव महाराजांचे योगदर्शनाला योगदान **डॉ. कलापिनी अगस्ती**	१३-१७
५	अथर्ववेद में कतिपय शिक्षाशास्त्रीय सन्दीर्भ **डॉ. कुलदीपक शुल्क**	१८-२१
६	अभिराजराजेन्द्रमिश्रस्य इन्द्रजालम् इति प्रहसने वाचिकप्रयोगकौशलम् **मौसुमी दास**	२२-२५
७	अभिजात संस्कृत साहित्यातील सरस्वती - एक दृष्टीक्षेप **सौ. मृण्मयी प्रसन्न चंदगडकर**	२६-२९
८	धर्मशास्त्रीय अग्निदिव्य **डॉ. श्रीमती ज्योती प्र. नाईक**	३०-३४
९	ज्योतिषशास्त्र में पर्यावरण चिंतन **नवीन कुमार**	३५-३८
१०	संस्कृत साहित्य और जीवन व्यवस्थापन **प्रा. पाटील अभय सखाराम**	३९-४४
११	संस्कृत भाषा में व्याकरण का महत्व **प्रा. सत्येंद्र संगाप्पा राऊत**	४५-४७
१२	संस्कृतसाहित्ये नाटकस्य स्वरुपम् **Dr. R. N. Dipak**	४८-५२
१३	संस्कृत बसवपुराणातील अस्पृश्यता निर्मूलन **प्रा. शंकर धारबा घाडगे**	५३-५६

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VIII Issue - I Pali / Sanskrit / Music January - March - 2019

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

पदोंके प्रकृति प्रत्यय आदि का विभाग किया । इंद्र के अनेक शिष्योंका उल्लेख है जिसमें आपिशली, कश्यप , गार्ग्य , गालव, चाक्रवर्मण, भारद्वाज, शाकटायन, शाकल्य, सेनक, स्फोटायन । पाणिनी के बाद व्याकरण की परम्परा चलती रही ।

संस्कृत भाषा मे व्याकरण का महत्व

भाषा विचारोंकी अभिव्यक्ति का माध्यम है । संस्कृत भाषा मे छह वेदांग माने गये है - शिक्षा, कल्प अर्थात् कर्मकांड, व्याकरण, निरूक्त अर्थात् भाषाविज्ञान, छंद और ज्योतिष । इन वेदांगो मे व्याकरण को प्रमुख स्थान दिया है-" प्रधानंच षडंगेषु व्याकरणम् "। ऋग्वेद की कुछ ऋचाओं मे भी व्याकरण शास्त्र का वर्णन मिलता है ।

'चत्वारि शृगांत्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य ।

त्रिधा बध्दो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ आ विवेश ' ।। ऋग्वेद 4।58/3

अर्थात् नाम, आख्यात (क्रिया) उपसर्ग और निपात इस प्रकार चार शिंगवाला, वर्तमान भूत और भविष्य जिसके तीन चरण (पाद) है । सुबन्त और तिङ्गन्त जिसके दो मस्तक है । सात विभक्तिया जिसके हाथ है ,उर कंठ और मस्तक इस प्रकार तीन जगहों पर बध्द ऐसा वृषभ है इस प्रकार वर्णन किया गया है । तो एक जगह मंत्र मे व्याकरण जाननेवाला व्यक्ती और न जाननेवाला व्यक्ती इनमे भेद बताया है -

उतत्वः पश्यन्न ददर्श वाचम् उतत्वः श्रुण्वन्न श्रुणोत्येनाम् ।

उतो त्वस्मै तन्वं विसस्त्रे जायेव पत्ये उशती सुवासाः ।।

व्याकरण न जाननेवाला मनुष्य देखते हुए भी अनदेखा करता है सुनकर भी अनसुना करता है परंतु व्याकरण जाननेवाले मनुष्यके आगे वाणी उस प्रकार अपना रूप प्रकट करती है जिस प्रकार पत्नी अपने पति के आगे अपना रूप प्रकट करती है ।

इस प्रकार व्याकरण शास्त्र का मूल ऋग्वेद मे मिलता है । वैदिक मंत्रो मे अनेश शब्दों की व्युत्पती मिलती है । वेदों के पद पाठ मे शब्दोंके पदोंका विभाग किया गया है । उपसर्ग, धातु, सामासिक शब्दों का विग्रह, प्रत्यय आदि विभाग किया है । ब्राम्हणग्रंथ, रामायण, महाभारत आदि प्राचीन वाङ्गमय मे भी व्याकरण मिलता है । ब्राम्हणग्रंथो मे कृत कृर्वत् और करिष्यत् शब्दों का प्रयोग, भूत वर्तमान भविष्य इन अर्थो मे किया है । आरण्यक और उपनिषद ग्रंथो मे वाणीके बारे मे कहते हुए स्वर, ऊष्मन, स्पर्श , धातु, प्रातिपादिक, नाम, आख्यात, प्रत्यय, विभक्ति आदि शब्दोंका उल्लेख किया है । गोपथ ब्राम्हण मे व्याकरण विषयक अनेक शब्दोंका उल्लेख आया है - " **ॐकार पृच्छामः को धातुः, किं प्रातिपदिकम् ? किं नामाख्यात ? किं लिंगम् ? किं वचनम् ? का विभक्ति ? का प्रत्ययः? कःस्वरः उपसर्गो निपातः ? किं वै व्याकरणम् ? को विकारः ? को विकारी ? कतिभागः,कतिवर्णः, कत्यक्षरः ? कतिपदः ? कःसंयोग : ?**

इससे यह ज्ञात होता है कि ब्राम्हणग्रंथ तक व्याकरणकी रूपरेषा तैयार हुई थी । वैदिक शब्दों के विवेचन के लिए अनेक शिक्षा ग्रंथ प्रातिशाख्य तंत्र निरूक्त ग्रंथ के बारे मे "**व्याकरणस्य कात्स्न्यर्म्** " कहता है यास्क के निरूक्त ग्रंथमे प्रथम अध्याय पूर्णतः व्याकरण पर आधारित है ।

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

११. संस्कृत भाषा में व्याकरण का महत्व

प्रा. सत्येंद्र संगाप्पा राऊत
संस्कृत विभाग प्रमुख, जवाहर महाविद्यालय, अणदूर, ता. तुळजापूर, जि. उस्मानाबाद.

भारतवर्ष में संस्कृत व्याकरण की परम्परा

भारतवर्ष में संस्कृत व्याकरण शिक्षा परम्परा की जडे बहुत गहरी है । यहाँ पर व्याकरण की शिक्षा को सदा से ही प्रमुख स्थान मिला है । भारतीय संस्कृतिका मूल स्त्रोत एवं राष्ट्रभाषा हिंदी तथा अन्य भाषाओं की जननी, संस्कृत भाषा का अध्ययन संस्कृत व्याकरण के नियमबद्ध रचना से सरल और सुगम हो गया । सभी देशी विदेशी विशारदों ने स्वीकार किया है कि संस्कृत भाषा का व्याकरण अत्यन्त वैज्ञानिक एवं सुव्यवस्थित है । व्याकरण द्वारा ही भाषा रचना का ज्ञान होता है । भाषा विचारोंकी अभिव्यक्तिका माध्यम है । भाषा और विचार का क्षेत्र विकसनशील है । भाषा और विचारों का तारतम्य उसके इतिहास को बांधनेवाली विद्या व्याकरणही है । व्याकरण एक ऐसा शास्त्र है जिसका स्वतन्त्र अस्तित्व है और वह सर्वांगपरिपूर्ण है।

व्याकरण शब्द वि+आ+कृ धातु + ल्यूट् प्रत्यय के योगसे बना है । इसका आशय है - **" व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्द अनेनेति व्याकरणम् "** अर्थात् जिसकेद्वारा अर्थ स्वरूप शब्दसिध्दी हो पदों की मीमांसा करनेवाला शास्त्रही व्याकरण है । व्याकरण की शिक्षा के बिना बालक को शुध्द रूपसे भाषा का ज्ञान नही होता और नही उसका बुध्दिविकास होता है । व्याकरणके बिना न ही किसी साहित्य की कृति रूचकर प्रतीत होती है । भाषा को व्यवस्थित करने के लिए उसका विश्लेषण आवश्यक है । यह विश्लेषण व्याकरण द्वारा ही संभव है । इसीलिए प्रसिद्ध आंग्ल मनिषी डॉ.स्वीट ने व्याकरण को भाषा का विश्लेषण कहा है । भाषा का विस्तृत स्वरूप तत्कालीन भारतीय लोगोंके कंठ में समाया था । पाणिनी, कात्यायन और पतजंली इन तीन मुनीयों का प्रभाव व्याकरण पर इतना हुआ कि **" मुनित्रयं नमस्कृत्यम् "** कहकर व्याकरण का प्रारंभ किया जाता था । व्याकरण शास्त्रों की इस दीर्घ परम्पराका केंद्रबिंदु आचार्य पाणिनी ही है । पाणिनी ने वैज्ञानिक पध्दती से पूर्व व्याकरण संप्रदायोंका मंथन करके अष्टाध्यायी मे व्याकरणकी रचना की ।

ब्रम्हा को संस्कृतका आदि ज्ञाता माना जाता है। ब्रम्हाने व्याकरण का ज्ञान आचार्य बृहस्पति को दिया बृहस्पति से यह ज्ञान इंद्र के पास और इंद्रसे भरद्वाजके पास पहुँचा । सायण के मतानुसार इंद्र ही प्रथम वैयाकरण थे । उन्होंने ऋग्वेद भाष्य के उपोद्घात मे लिखा है ।- **" वाग्वै प्राच्य व्याकृतावदन् ते देवा इंद्रमब्रुवन्नि मां नो वाचं व्याकुर्वीत् । सोऽब्रवीत् वरं वृणे । तामिन्द्रो मध्यतोऽवक्रम्य व्याकरोत् । तस्मादियं व्याकृता वाक्।** अर्थात् प्राचीनभाषा पहले अव्याकृत (व्याकरण विहीन) थी । फिर किसी समय देवजन इंद्रके पास पहुँचे और निवेदन किया कि हमारी भाषा का व्याकरण होना चाहिए। सो आप व्याकरण बना देने की कृपा करें । इंद्र ने देवोंके आग्रह पर भाषा का व्याकरण बनाया । इंद्रने व्याकरण को संयत और परिमार्जित करने के लिए

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

भारतीय भाषाएँ ही नहीं, संसार की अन्य भाषाओं पर भी संस्कृत का प्रभाव है । विश्व की प्राचीनतम भाषा होनेके कारण इसमे उस समय की अन्य भाषाओं को प्रभावित किया है । लैटिन और ग्रीक पर संस्कृत भाषा के

प्रभाव के विषय में विद्वानों ने एकमत होकर अपनी सम्मति दे दी है; अतः उसके विषय में अधिक कहना उचित नहीं । संस्कृत का ' **पितृ** ' शब्द ही पश्चिम में '**पेटर** ' और ' **फादर** ' हो गया ।'**भ्रातृ**' शब्द '**ब्रदर**' के रूप में दिखायी पडता है । अंग्रेजी के **नोज, टूथ, स्टेशन, माईण्ड, कप, हैण्ड,** शब्दों का सम्बन्ध संस्कृत वेनस् , दन्त, स्था, मन, कुप्य, हन् शब्दोंसे कहीं न कहीं अवश्य है । संस्कृत के **मत्त, दिव्य,गो , जनन** शब्दों को अंग्रेजी के मैड, डिवाईन,काउ, जैनेसिस शब्दों के साथ रखकर पढिये । मंगोल भाषा में दिनोंके नाम इस प्रकार है - **आदिया (आदित्यवार), सोमिया (सोमवार) , बुधिया (बुधवार), सुकर (शुक्रवार), संचीव (शनिवार)** इन नामों में संस्कृत का प्रभाव स्पष्ट है ।

संस्कृत भाषा मे व्याकरण का विशेष महत्व है । पाणिनी की अष्टाध्यायी उच्चकोटि का व्याकरण ग्रंथ है । पतंजली का महाभाष्य भट्टोजी दीक्षित की सिध्दांतकौमुदी इस दिशा मे उल्लेखनीय है । पतंजली ने महाभाष्य मे व्याकरण को शब्दानुशासन कहा है । व्याकरण शब्दों का शासन नही करता वरन् उनका अनुशासन करता है । संस्कृतभाषा मे व्याकरण का स्थान निर्विवाद है । बिना व्याकरण के सही ज्ञान के द्वारा संस्कृत भाषा का ज्ञान अपूर्ण रहेगा । अतः शुध्द एवं परिष्कृत संस्कृत सीखने के लिए व्याकरण सीखना अनिवार्य है ।

संस्कृत व्याकरण शिक्षण के उद्देश

१. छात्रों को संस्कृत भाषा के ध्वनि तत्व से परिचित कराना ।।
२. शब्दों के विभिन्न रूपों का ज्ञान प्रदान करना ।
३. शुध्द वाक्य रचना की योग्यता प्रदान करना ।
४. छात्रों की तर्कशक्ति एवं रचनात्मक वृत्ति का विकास करना ।
५. भाषा के गुणदोषों को परखने की क्षमता प्रदान करना जिससे वे शुद्ध लिख व बोल सकें ।
६. सैद्धान्तिक व्याकरण का ज्ञान प्रदान करते हुए सिद्धान्तों का प्रयोग करने का अवसर प्रदान करना ।
७. छात्रों को संस्कृत भाषा की विशेषता से परिचित करना ।

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College
Andur Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad